हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
Date: 06.02.2019

आजादी से पहले खुद की बिजली से रोशन होता था बीएचयू कैंपस

वाराणसी | आनंद मिश्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में आजादी से 25 साल पहले बिजली उत्पादन होता था। बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज (बेंको) खुद की बिजली से विश्वविद्यालय परिसर को रोशन करता था। थर्मल पावर प्लांट के लिए विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय ने इंग्लैंड से ब्वायलर और फरनेस मंगाया था।

गौरव

- बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र करते थे बिजली उत्पादन
- देश की तकनीकी शिक्षा को सबल बनाने में बेंको महत्वपूर्ण योगदान

जैसे आग की खोज ने मानव को सभ्यता का पथ पकड़ाया उसी तरह बेंको ने देश को तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में सबलतता प्रदान करने में योगदान दिया। बिजली उत्पादन ने इंजीनियरिंग कालेज की गौरव गाथा लिखने में मदद की।

आईआईटी के पुरातन छात्र डॉ. रामजी अग्रवाल ने बताया कि मशीनों को चलाने तथा नवीन प्रयोग में बिजली उत्पादन कारगर साबित हुआ। उस समय बीएचयू में बिजली वाले पंखे नहीं थे इस लिए महज 10 किलोवाट बिजली के उत्पादन से काम चल जाता था। इस बिजली का उपयोग बल्ब जलाने के लिए हुआ। बेंको ने भारतीय संस्कृति को कायम रखा। क्योंकि यहां भारतीय रहन-सहन तथा कल्चर को अपनाकर काम होता था। मालवीय जी यहां संवेदनाओं से भरे ज्ञानी युवा व इंजीनियर बनाते थे। बेंकों में इलेक्ट्रीकल, मेकैनिकल और सिरेमिक की पढ़ाई होती थी। पढ़ाई का आधा हिस्सा प्रेक्टिकल व शेष समय में कक्षाएं चलती थीं। इसलिए यहां के छात्र ज्यादा क्रिएटिव होते थे। बेंको देश की वह इकलौती डिग्री देता था जिसमें इलेक्ट्रीकल व मैकेनिकल जुड़ा था। इसके अलावा छात्रों को सिरेमिक का भी ज्ञान दिया जाता था।

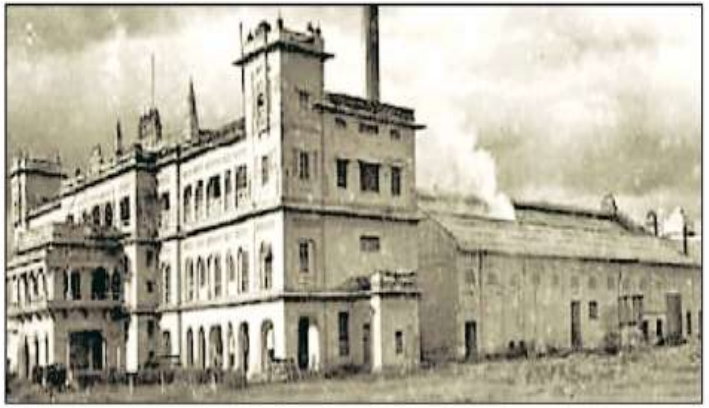

बीएचयू का थर्मल पावर प्लांट। जहां से आजादी के पहले बिजली का उत्पादन होता था।

> बेंको से सफर शुरू कर आईआईटी बना संस्थान अब नवीन आयामों को हांसिल करने की राह पर चल पड़ा है। समाज के साथ देश की प्रगति के लिए यहां शोध और इनोवेशन की गुणवत्ता बढ़ाई जाएगी।
> **प्रो. पीके जैन**, निदेशक, आईआईटी बीएचयू

10 किलोवाट बिजली उत्पादन होता था बीएचयू के थर्मल पावर प्लांट से

25 साल पहले आजादी के शुरू हो गया था उत्पादन इंग्लैंड से आई थीं मशीनें

कोयला जलाकर बनाई जाती थी बिजली

बीएचयू में कोयले से 1922-23 में 10 किलोवॉट बिजली का उत्पादन होता था। इससे लैब, हॉस्टलों तथा कक्षाओं में केवल बल्ब जलते थे। इस थर्मल प्लांट के लिए उस समय इंग्लैण्ड से फरनेस व ब्वायलर पानी के जहाज से मंगाए गए थे। बीएचयू से लंका के भी कुछ भाग में बिजली दी जाती थी। विश्वविद्यालय में बिजली की खपत बढ़ी तब 1927-30 के बीच इस थर्मल पावर की क्षमता 10 से बढ़ाकर 100 किलोवाट कर दिया गया। आजादी के बाद इस प्लांट को बंद कर दिया गया।